दानिएल

[illegible]

इस किताब के लिखने वाले के पीछे यह नाम दिया गया था। दानिएल की किताब बाबुल में एक इस्राईल से एक यहूदी जिलावतन बतौर उसके अपने वक़्त की मा — हसल या पैदावार थी। दानिएल नाम का मतलब है ख़ुदा मेरा मुनसिफ़ है किताब ख़ुद दलालत करती है कि दानिएल इस का मुसन्निफ़ था एक दो इबारते हैं 9:2; 10:2 दानिएल ने अपने तजुरबात और नबुव्वतें यहूदी जिलावत्नों के लिए बाबुल के दारूल ख़िलाफ़े (राजधानी) में रहने के दौरान क़लमबंद किये जहां बादशाह के लिए उसकी ख़िदमत ने मुआशिरे के ऊँचे तबक़े के लोगों या ओहदे दारों तक पहुंचने का मौक़ा अता किया। ख़ुदावन्द के लिए उसकी वफ़ादारी ख़िदमत न सिर्फ़ अपने मुल्क और अपनी तहज़ीब में बेमिसल नहीं करती बल्कि नविश्तों के तमाम लोगों के दर्मियान भी उसको बेमिसल करार देती है।

[illegible]

इस के तस्नीफ़ की तारीख़ तक़रीबन 605 - 530 क़ब्ल मसीह के बीच है।

[illegible]

बाबुल के तमाम यहूदी जिलावतन और बाद में तमाम कलाम के क़ारिईन।

[illegible]

दानिएल की किताब दानिएल नबी के तमाम काररवाईयों, नबूवतों और रोयाओं को क़लम्बन्द करती हैं। दानिएल की किताब सिखाती हैं कि ख़ुदा उन सब के लिए वफ़ादार है जो उसके पीछे चलते हैं। इम्तिहान और मुख़ालिफ़ों की अकसरियत के

बावजूद भी ईमान्दारों को ख़ुदा के लिए वफ़ादारी से खड़े होने की ज़रूरत है जब वह अपनी ज़मीनी नौकरी पर जाते हैं।

[illegible]

ख़ुदा की हुकूमत (फ़र्मा रवाई)।

बैरूनी ख़ाका

1. बड़ी मूरत की बाबत दानिएल का ख़्वाब की ताबीर को बताना — 1:1-2:49
2. सदरक, मीसक, और अब्दनजू का आग की भट्टी से निकाला जाना — 3:1-30
3. बादशाह नबुकदनेज़र का ख़्वाब — 4:1-37
4. दीवार पर उंगलियों का लिखा जाना और बर्बादी की बाबत दानिएल की नबुव्वत — 5:1-31
5. दानिएल शेरों की मान्द में — 6:1-28
6. चार ख़ूनख़ार जानवरों का रोया — 7:1-28
7. 1 मेंढा, बकरा और छोटे सींग का रोया — 8:1-27
8. दानिएल की दुआ जो 70 साल में क़बूल हुई — 9:1-27
9. 1 आख़री जंग — ए — अज़ीम का रोया — 10:1-12:13

[illegible]

1 शाह — ए — यहूदाह यहूयक़ीम की सल्तनत के तीसरे साल
में शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने येरूशलेम पर चढ़ाई करके
उसका घिराव किया।
2 और ख़ुदावन्द ने शाह यहूदाह यहूयक़ीम को और ख़ुदा के घर
के बा'ज़ बर्तनों को उसके हवाले कर दिया और उनको सिन'आर
की सरज़मीन में अपने बुतख़ाने में ले गया, चुनाँचे उसने बर्तनों
को अपने बुत के ख़ज़ाने में दाख़िल किया।
3 और बादशाह ने अपने ख़्वाजासराओं के सरदार असपनज़ को
हुक्म किया कि बनी इस्राईल में से और बादशाह की नस्ल में से
और शरीफ़ों में से लोगों को हाज़िर करे।

4 वह बे'ऐब जवान बल्कि ख़ूबसूरत और हिकमत में माहिर और
हर तरह से 'अक़्लमन्द और 'आलिम हों, जिनमें ये लियाक़त हो
कि शाही महल में खड़े रहें, और वह उनको क़सदियों के 'इल्म और
उनकी ज़बान की ता'लीम दें।
5 और बादशाह ने उनके लिए शाही ख़ुराक में से और अपने
पीने की मय में से रोज़ाना वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया कि तीन साल
तक उनकी परवरिश हो, ताकि इसके बाद वह बादशाह के सामने
खड़े हो सकें।
6 और उनमें बनी यहूदाह में से दानीएल और हननियाह और
मीसाएल और 'अज़रियाह थे।
7 और ख़्वाजासराओं के सरदार ने उनके नाम रख्खे; उसने
दानीएल को बेल्तशज़र, हननियाह को सदरक, और मीसाएल को
मीसक, और 'अज़रियाह को 'अबदनजू कहा।
8 लेकिन दानीएल ने अपने दिल में इरादा किया कि अपने आप
को शाही ख़ुराक से और उसकी शराब से, जो वह पीता था, नापाक
न करे; तब उसने ख़्वाजासराओं के सरदार से दरख़्वास्त की कि वह
अपने आप को नापाक करने से मा'ज़ूर रखा जाए।
9 और ख़ुदा ने दानीएल को ख़्वाजासराओं के सरदार की नज़र
में मक़्बूल — ओ — महबूब ठहराया।
10 चुनाँचे ख़्वाजासराओं के सरदार ने दानीएल से कहा, मैं
अपने ख़ुदावन्द बादशाह से, जिसने तुम्हारा खाना पीना मुक़र्रर
किया है डरता हूँ; तुम्हारे चेहरे उसकी नज़र में तुम्हारे हम उम्रों
के चेहरों से क्यूँ ज़बून हों, और यूँ तुम मेरे सिर को बादशाह के
सामने ख़तरे में डालो।
11 तब दानीएल ने दारोग़ा से जिसको ख़्वाजासराओं के सरदार
ने दानीएल और हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह पर
मुक़र्रर किया था कहा,
12 "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू दस दिन तक अपने ख़ादिमों

को आज़मा कर देख, और खाने को साग — पात और पीने को
पानी हम को दिलवा।
13 तब हमारे चेहरे और उन जवानों के चेहरे जो शाही खाना
खाते हैं, तेरे सामने देखें जाएँ फिर अपने ख़ादिमों से जो तू
मुनासिब समझे वह कर।"
14 चुनाँचे उसने उनकी ये बात क़ुबूल की और दस दिनों तक
उनको आज़माया।
15 और दस दिन के बाद उनके चेहरों पर उन सब जवानों के
चेहरों की निस्बत जो शाही खाना खाते थे, ज़्यादा रौनक़ और
ताज़गी नज़र आई।
16 तब दारोग़ा ने उनकी ख़ुराक और शराब को जो उनके लिए
मुक़र्रर थी रोक दिया, और उनको साग — पात खाने को दिया।
17 तब ख़ुदा ने उन चारों जवानों को मा'रिफ़त और हर तरह की
हिकमत और 'इल्म में महारत बख़्शी, और दानीएल हर तरह की
रोया और ख़्वाब में साहब — ए — 'इल्म था।
18 और जब वह दिन गुज़र गए जिनके बाद बादशाह के फ़रमान
के मुताबिक़ उनको हाज़िर होना था, तो ख़्वाजासराओं का सरदार
उनको नबूकदनज़र के सामने ले गया।
19 और बादशाह ने उनसे बातें कीं और उनमें से दानीएल और
हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह की तरह कोई न था,
इसलिए वह बादशाह के सामने खड़े रहने लगे।
20 और हर तरह की ख़ैरमन्दी और अक़्लमन्दी के बारे में
जो कुछ बादशाह ने उनसे पूछा, उनको तमाम फ़ालगीरों और
नजूमियों से जो उसके तमाम मुल्क में थे, दस दर्जा बेहतर पाया।
21 और दानीएल ख़ोरस बादशाह के पहले साल तक ज़िन्दा
था।

2

[illegible]

1 और नबूकदनज़र ने अपनी सल्तनत के दूसरे साल में ऐसे
ख़्वाब देखे जिनसे उसका दिल घबरा गया और उसकी नींद जाती
रही।
2 तब बादशाह ने हुक्म दिया कि फ़ालगीरों और नजूमियों
और जादूगरों और कसदियों को बुलाएँ कि बादशाह के ख़्वाब उसे
बताएँ। चुनाँचे वह आए और बादशाह के सामने खड़े हुए।
3 और बादशाह ने उनसे कहा, कि "मैने एक ख़्वाब देखा है, और
उस ख़्वाब को दरियाफ़्त करने के लिए मेरी जान बेताब है।"
4 तब कसदियों ने बादशाह के सामने अरामी ज़बान में 'अर्ज़
किया, कि ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह! अपने ख़ादिमों से
ख़्वाब बयान कर, और हम उसकी ता'बीर करेंगे।
5 बादशाह ने कसदियों को जवाब दिया, 'मैं तो ये हुक्म दे चुका
हूँ कि अगर तुम ख़्वाब न बताओ और उसकी ता'बीर न करो, तो
टुकड़े टुकड़े किए जाओगे और तुम्हारे घर मज़बले हो जाएँगे।
6 लेकिन अगर ख़्वाब और उसकी ता'बीर बताओ, तो मुझ से
इन'आम और बदला और बड़ी 'इज़्ज़त हासिल करोगे; इसलिए
ख़्वाब और उसकी ता'बीर मुझ से बयान करो।
7 उन्होंने फिर 'अर्ज़ किया, कि "बादशाह अपने ख़ादिमों से
ख़्वाब बयान करे, तो हम उसकी ता'बीर करेंगे।"
8 बादशाह ने जवाब दिया, कि "मैं ख़ूब जानता हूँ कि तुम
टालना चाहते हो, क्यूँकि तुम जानते हो कि मैं हुक्म दे चुका हूँ।
9 लेकिन अगर तुम मुझ को ख़्वाब न बताओगे, तो तुम्हारे लिए
एक ही हुक्म है, क्यूँकि तुम ने झूट और बहाने की बातें बनाई ताकि
मेरे सामने बयान करो कि वक़्त टल जाए; इसलिए ख़्वाब बताओ
तो मैं जानूँ कि तुम उसकी ता'बीर भी बयान कर सकते हो।"
10 कसदियों ने बादशाह से 'अर्ज़ किया, कि "इस ज़मीन पर
ऐसा तो कोई भी नहीं जो बादशाह की बात बता सके, और न
कोई बादशाह या अमीर या हाकिम ऐसा हुआ है जिसने कभी

ऐसा सवाल किसी फ़ालगीर या नजूमी या कसदी से किया हो।
11 और जो बात बादशाह तलब करता है, निहायत मुश्किल
है, और मा'बूदों के सिवा जिनकी सुकूनत इंसान के साथ नहीं,
बादशाह के सामने कोई उसको बयान नहीं कर सकता।"
12 इसलिए बादशाह ग़ज़बनाक और सख़्त ग़ुस्सा हुआ और
उसने हुक्म किया कि बाबुल के तमाम हकीमों को हलाक करें।
13 तब यह हुक्म जगह जगह पहुँचा कि हकीम क़त्ल किए
जाएँ, तब दानीएल और उसके साथियों को भी ढूँडने लगे कि
उनको क़त्ल करें।
14 तब दानीएल ने बादशाह के जिलौदारों के सरदार अरयूक
को, जो बाबुल के हकीमों को क़त्ल करने को निकला था, ख़ैरमन्दी
और 'अक़्ल से जवाब दिया।
15 उसने बादशाह के जिलौदारों के सरदार अरयूक से पूछा,
"बादशाह ने ऐसा सख़्त हुक्म क्यूँ जारी किया?" तब अरयूक ने
दानीएल से इसकी हक़ीक़त बताई।
16 और दानीएल ने अन्दर जाकर बादशाह से 'अर्ज़ किया
कि मुझे मुहलत मिले, तो मैं बादशाह के सामने ता'बीर बयान
करूँगा।
17 तब दानीएल ने अपने घर जाकर हननियाह और मीसाएल
और 'अज़रियाह अपने साथियों को ख़बर दी,
18 ताकि वह इस राज़ के बारे में आसमान के ख़ुदा से रहमत
तलब करें कि दानीएल और उसके साथी बाबुल के बाक़ी हकीमों
के साथ हलाक न हों।
19 फिर रात को ख़्वाब में दानीएल पर वह राज़ खुल गया, और
उसने आसमान के ख़ुदा को मुबारक कहा।
20 दानीएल ने कहा: "ख़ुदा का नाम हमेशा तक मुबारक हो,
क्यूँकि हिकमत और क़ुदरत उसी की है।
21 वही वक़्तों और ज़मानों को तब्दील करता है, वही बादशाहों

को मा'ज़ूल और क़ायम करता है, वही हकीमों को हिकमत और
अक़्लमन्दों को 'इल्म इनायत करता है।
22 वही गहरी और छुपी चीज़ों को ज़ाहिर करता है, और जो
कुछ अँधेरे में है उसे जानता है और नूर उसी के साथ है।
23 मैं तेरा शुक्र करता हूँ और तेरी 'इबा'दत करता हूँ ऐ मेरे बाप
— दादा के ख़ुदा, जिसने मुझे हिकमत और क़ुदरत बख़्शी और जो
कुछ हम ने तुझ से माँगा तू ने मुझ पर ज़ाहिर किया, क्यूँकि तू ने
बादशाह का मुआ'मिला हम पर ज़ाहिर किया है।"
24 तब दानीएल अरयूक के पास गया, जो बादशाह की तरफ़
से बाबुल के हकीमों के क़त्ल पर मुक़र्रर हुआ था, और उस से यूँ
कहा, कि "बाबुल के हकीमों को हलाक न कर, मुझे बादशाह के
सामने ले चल, मैं बादशाह को ता'बीर बता दूँगा।"
25 तब अरयूक दानीएल को जल्दी से बादशाह के सामने ले
गया और 'अर्ज़ किया, कि "मुझे यहूदाह के ग़ुलामों में एक शख़्स
मिल गया है, जो बादशाह को ता'बीर बता देगा।"
26 बादशाह ने दानीएल से जिसका लक़ब बेल्तशज़र था पूछा,
क्या तू उस ख़्वाब को जो मैने देखा, और उसकी ता'बीर को मुझ
से बयान कर सकता है?
27 दानीएल ने बादशाह के सामने 'अर्ज़ किया, कि वह राज़ जो
बादशाह ने पूछा, हुक्मा और नजूमी और जादूगर और फ़ालगीर
बादशाह को बता नहीं सकते।
28 लेकिन आसमान पर एक ख़ुदा है जो राज़ की बातें ज़ाहिर
करता है, और उसने नबूकदनज़र बादशाह पर ज़ाहिर किया है
कि आख़िरी दिनों में क्या होने को आएगा; तेरा ख़्वाब और तेरे
दिमाग़ी ख़्याल जो तू ने अपने पलंग पर देखे यह हैं:
29 ऐ बादशाह, तू अपने पलंग पर लेटा हुआ ख़्याल करने लगा
कि आइन्दा को क्या होगा, तब वह जो राज़ों का खोलने वाला है,

तुझ पर ज़ाहिर करता है कि क्या कुछ होगा।
30 लेकिन इस राज़ के मुझ पर ज़ाहिर होने की वजह यह नहीं
कि मुझ में किसी और ज़ी हयात से ज़्यादा हिकमत है, बल्कि यह
कि इसकी ता'बीर बादशाह से बयान की जाए और तू अपने दिल
के ख़्यालात को पहचाने।
31 ऐ बादशाह, तू ने एक बड़ी मूरत देखी; वह बड़ी मूरत
जिसकी रौनक़ बेनिहायत थी, तेरे सामने खड़ी हुई और उसकी
सूरत हैबतनाक थी।
32 उस मूरत का सिर ख़ालिस सोने का था, उसका सीना और
उसके बाज़ू चाँदी के, उसका शिकम और उसकी राने ताँम्बे की थीं;
33 उसकी टाँगे लोहे की, और उसके पाँव कुछ लोहे के और कुछ
मिट्टी के थे।
34 तू उसे देखता रहा, यहाँ तक कि एक पत्थर हाथ लगाए बग़ैर
ही काटा गया, और उस मूरत के पाँव पर जो लोहे और मिट्टी के
थे लगा और उनको टुकड़े — टुकड़े कर दिया।
35 तब लोहा और मिट्टी और ताँम्बा और चाँदी और सोना,
टुकड़े टुकड़े किए गए और ताबिस्तानी खलीहान के भूसे की तरह
हुए, और हवा उनको उड़ा ले गई, यहाँ तक कि उनका पता न
मिला; और वह पत्थर जिसने उस मूरत को तोड़ा, एक बड़ा पहाड़
बन गया और सारी ज़मीन में फैल गया।
36 "वह ख़्वाब यह है; और उसकी ता'बीर बादशाह के सामने
बयान करता हूँ।
37 ऐ बादशाह, तू शहनशाह है, जिसको आसमान के ख़ुदा ने
बादशाही और — तवानाई और क़ुदरत — ओ — शौकत बख़्शी
है।
38 और जहाँ कहीं बनी आदम रहा करते हैं, उसने मैदान के
जानवर और हवा के परिन्दे तेरे हवाले करके तुझ को उन सब का
हाकिम बनाया है; वह सोने का सिर तू ही है।

39 और तेरे बाद एक और सल्तनत खड़ी होगी, जो तुझ से
छोटी होगी और उसके बाद एक और सल्तनत ताम्बे की जो पूरी
ज़मीन पर हुकूमत करेगी।
40 और चौथी सल्तनत लोहे की तरह मज़बूत होगी, और जिस
तरह लोहा तोड़ डालता है और सब चीज़ों पर ग़ालिब आता
है; हाँ, जिस तरह लोहा सब चीज़ों को टुकड़े — टुकड़े करता
और कुचलता है उसी तरह वह टुकड़े — टुकड़े करेगी और कुचल
डालेगी।
41 और जो तू ने देखा कि उसके पाँव और उँगलियाँ, कुछ तो
कुम्हार की मिट्टी की और कुछ लोहे की थी; इसलिए उस सल्तनत
में फ़ूट होगी, मगर जैसा तू ने देखा कि उसमें लोहा मिट्टी से मिला
हुआ था, उसमें लोहे की मज़बूती होगी।
42 और चूँकि पाँव की उँगलियाँ कुछ लोहे की और कुछ मिट्टी
की थीं, इसलिए सल्तनत कुछ मज़बूत और कुछ कमज़ोर होगी।
43 और जैसा तूने देखा कि लोहा मिट्टी से मिला हुआ था, वह
बनी आदम से मिले हुए होंगे, लेकिन जैसे लोहा मिट्टी से मेल
नहीं खाता वैसे ही वह भी आपस में मेल न खाएँगे।
44 और उन बादशाहों के दिनों में आसमान का ख़ुदा एक
सल्तनत खड़ा करेगा, जो हमेशा बर्बाद न होगी और उसकी
हुकूमत किसी दूसरी क़ौम के हवाले न की जाएगी, बल्कि वह
इन तमाम हुकूमतों को टुकड़े — टुकड़े और बर्बाद करेगी, और
वही हमेशा तक क़ायम रहेगी।
45 जैसा तू ने देखा कि वह पत्थर हाथ लगाए बग़ैर ही पहाड़
से काटा गया, और उसने लोहे और ताँम्बे और मिट्टी और चाँदी
और सोने को टुकड़े — टुकड़े किया; ख़ुदा त'आला ने बादशाह
को वह कुछ दिखाया जो आगे को होने वाला हैं, और यह ख़्वाब
यक़ीनी है और उसकी ता'बीर यक़ीनी।"
46 तब नबूकदनज़र बादशाह ने मुँह के बल गिर कर दानीएल

को सिज्दा किया, और हुक्म दिया कि उसे हदिया दें और उसके
सामने ख़ुशबू जलाएँ।
47 बादशाह ने दानीएल से कहा, "हक़ीक़त में तेरा ख़ुदा मा'बूदों
का मा'बूद और बादशाहों का ख़ुदावन्द और राज़ों का खोलने
वाला है, क्यूँकि तू इस राज़ को खोल सका।"
48 तब बादशाह ने दानीएल को सरफ़राज़ किया, और उसे
बहुत से बड़े — बड़े तोहफ़े 'अता किए; और उसको बाबुल के
तमाम सूबों पर इख़्तियार दिया, और बाबुल के तमाम हकीमों पर
हुक्मरानी 'इनायत की।
49 तब दानीएल ने बादशाह से दरख़्वास्त की और उसने सदरक
मीसक और 'अबदनजू को बाबुल के सूबे की ज़िम्मेदारी पर मुक़र्रर
किया, लेकिन दानीएल बादशाह के दरबार में रहा।

3

[illegible]

1 नबूकदनज़र बादशाह ने एक सोने की मूरत बनवाई जिसकी
लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई छ: हाथ थी, और उसे दूरा के
मैदान सूबा — ए — बाबुल में खड़ा किया।
2 तब नबूकदनज़र बादशाह ने लोगों को भेजा कि नाज़िमों
और हाकिमों और सरदारों और क़ाज़ियों और ख़ज़ाँचियों और
सलाहकारों और मुफ़्तियों और तमाम सूबों के 'उहदेदारों को जमा'
करें, ताकि वह उस मूरत की 'इज़्ज़त को हाज़िर हों जिसको
नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया था।
3 तब नाज़िम, और हाकिम, और सरदार, और क़ाज़ी, और
ख़ज़ाँची, और सलाहकार, और मुफ़्ती और सूबों के तमाम
'उहदेदार, उस मूरत की 'इज़्ज़त के लिए जिसे नबूकदनज़र
बादशाह ने खड़ा किया था जमा' हुए; और वह उस मूरत के सामने
जिसको नबूकदनज़र ने खड़ा किया था, खड़े हुए।

4 तब एक 'ऐलान करने वाले ने बलन्द आवाज़ से पुकार कर
कहा, ऐ लोगों, ऐ उम्मतों, और ऐ मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोलने वालों!
तुम्हारे लिए यह हुक्म है कि
5 जिस वक़्त क़रना, और ने, और सितार, और रबाब, और
बरबत, और चग़ाना, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुनो,
तो उस सोने की मूरत के सामने जिसको नबूकदनज़र बादशाह
ने खड़ा किया है गिर कर सिज्दा करो।
6 और जो कोई गिर कर सिज्दा न करे, उसी वक़्त आग की
जलती भट्टी में डाला जाएगा।
7 इसलिए जिस वक़्त सब लोगों ने क़रना, और ने, और सितार,
और रबाब, और बरबत, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुनी,
तो सब लोगों और उम्मतों और मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोलने वालों ने
उस मूरत के सामने, जिसको नबूकदनज़र बादशाह ने खड़ा किया
था, गिर कर सिज्दा किया।
8 तब उस वक़्त चन्द कसदियों ने आकर यहूदियों पर इल्ज़ाम
लगाया।
9 उन्होंने नबूकदनज़र बादशाह से कहा, ऐ बादशाह, हमेशा
तक जीता रह!
10 ऐ बादशाह, तूने यह फ़रमान जारी किया है कि जो कोई
क़रना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चुग़ाना,
और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुने, गिर कर सोने की मूरत को
सिज्दा करे।
11 और जो कोई गिर कर सिज्दा न करे, आग की जलती भट्टी
में डाला जाएगा।
12 अब चन्द यहूदी हैं, जिनको तू ने बाबुल के सूबे की
ज़िम्मेदारी पर मुक़र्रर किया है, या'नी सदरक और मीसक और
'अबदनजू, इन आदमियों ने, ऐ बादशाह, तेरी ता'ज़ीम नहीं की।
वह तेरे मा'बूदों की इबादत नहीं करते, और उस सोने की मूरत
को जिसे तू ने खड़ा किया सिज्दा नहीं करते।

13 तब नबूकदनज़र ने क़हर — ओ — ग़ज़ब से हुक्म किया कि
सदरक और मीसक और 'अबदनजू को हाज़िर करें। और उन्होंने
उन आदमियों को बादशाह के सामने हाज़िर किया।
14 नबूकदनज़र ने उनसे कहा, ऐ सदरक और मीसक और
'अबदनजू क्या यह सच है कि तुम मेरे मा'बूदों की इबादत नहीं
करते हो, और उस सोने की मूरत को जिसे मैने खड़ा किया सिज्दा
नहीं करते?
15 अब अगर तुम तैयार रहो कि जिस वक़्त क़रना, और ने,
और सितार, और रबाब, और बरबत, और चग़ाना, और हर तरह
के साज़ की आवाज़ सुनो, तो उस मूरत के सामने जो मैने बनवाई
है गिर कर सिज्दा करो तो बेहतर, लेकिन अगर सिज्दा न करोगे,
तो उसी वक़्त आग की जलती भट्टी में डाले जाओगे और कौन
सा मा'बूद तुम को मेरे हाथ से छुड़ाएगा?
16 सदरक और मीसक और 'अबदनजू ने बादशाह से 'अर्ज़ किया
कि "ऐ नबूकदनज़र, इस हुक्म में हम तुझे जवाब देना ज़रूरी नहीं
समझते।
17 देख, हमारा ख़ुदा जिसकी हम इबादत करते हैं, हम को आग
की जलती भट्टी से छुड़ाने की क़ुदरत रखता है, और ऐ बादशाह
वही हम को तेरे हाथ से छुड़ाएगा।
18 और नहीं, तो ऐ बादशाह तुझे मा'लूम हो कि हम तेरे मा'बूदों
की इबादत नहीं करेंगे, और उस सोने की मूरत को जो तूने खड़ी
की है सिज्दा नहीं करेंगे।
19 तब नबूकदनज़र ग़ुस्से से भर गया, और उसके चेहरे का रंग
सदरक और मीसक और 'अबदनजू पर बदल गया, और उसने हुक्म
दिया कि भट्टी की आँच मा'मूल से सात गुना ज़्यादा करें।
20 और उसने अपने लश्कर के चन्द ताक़तवर पहलवानों को
हुक्म दिया कि सदरक और मीसक और 'अबदनजू को बाँध कर
आग की जलती भट्टी में डाल दें।

21 तब यह मर्द अपने पैजामों — क़मीसों और 'अमामों के साथ
बाँधे गए, और आग की जलती भट्टी में फेंक दिए गए।
22 इसलिए चूँकि बादशाह का हुक्म ताकीदी था और भट्टी
की ऑच निहायत तेज़ थी, इसलिए सदरक और मीसक और
अबदनजू को उठाने वाले आग के शो'लों से हलाक हो गए;
23 और यह तीन आदमी या'नी सदरक और मीसक और
अबदनजू, बँधे हुए आग की जलती भट्टी में जा पड़े।
24 तब नबूकदनज़र बादशाह सरासीमा होकर जल्द उठा, और
अरकान — ए — दौलत से मुख़ातिब होकर कहने लगा, क्या हम
ने तीन शख़्सों को बँधवा कर आग में नहीं डलवाया?" उन्होंने
जवाब दिया, बादशाह ने सच फ़रमाया है।
25 उसने कहा, देखो, मैं चार शख़्स आग में खुले फिरते देखता
हूँ, और उनको कुछ नुक़सान नहीं पहुँचा; और चौथे की सूरत
इलाहज़ादे की तरह है।
26 तब नबूकदनज़र ने आग की जलती भट्टी के दरवाज़े पर
आकर कहा, ऐ सदरक और मीसक और अबदनजू, ख़ुदा —
त'आला के बन्दो! बाहर निकलो और इधर आओ! इसलिए
सदरक और मीसक और अबदनजू आग से निकल आए।
27 तब नाज़िमों और हाकिमों और सरदारों और बादशाह के
सलाहकारों ने जमा' होकर उन शख़्सों पर नज़र की, और देखा कि
आग ने उनके बदनों पर कुछ असर न किया और उनके सिर का
एक बाल भी न जलाया, और उनकी पोशाक में कुछ फ़र्क़ न आया
और उनसे आग से जलने की बू भी न आती थी।
28 तब नबूकदनज़र ने पुकार कर कहा, कि "सदरक और मीसक
और 'अबदनजू का ख़ुदा मुबारक हो, जिसने अपना फ़रिश्ता भेज
कर अपने बन्दों को रिहाई बख़्शी, जिन्होंने उस पर भरोसा करके
बादशाह के हुक्म को टाल दिया, और अपने बदनों को निसार
किया कि अपने ख़ुदा के अलावा किसी दूसरे मा'बूद की इबादत

और बन्दगी न करें।
29 इसलिए मैं यह फ़रमान जारी करता हूँ कि जो क़ौम या
उम्मत या अहल — ए — ज़ुबान, सदरक और मीसक और
'अबदनजू के ख़ुदा के हक़ में कोई ना मुनासिब बात कहें उनके
टुकड़े — टुकड़े किए जाएँगे और उनके घर मज़बला हो जाएँगे,
क्यूँकि कोई दूसरा मा'बूद नहीं जो इस तरह रिहाई दे सके।"
30 फिर बादशाह ने सदरक और मीसक और 'अबदनजू को सूबा
— ए — बाबुल में सरफ़राज़ किया।

4

[illegible]

1 नबूकदनज़र बादशाह की तरफ़ से तमाम लोगों, उम्मतों और
अहल — ए — ज़ुबान के लिए जो तमाम इस ज़मीन पर रहते हैं:
तुम्हारी सलामती होती रहे।
2 मैने मुनासिब जाना कि उन निशानों और 'अजायब को ज़ाहिर
करूँ जो ख़ुदा — त'आला ने मुझ पर ज़ाहिर किए हैं।
3 उसके निशान कैसे 'अज़ीम, और उसके 'अजायब कैसे
पसंदीदा हैं! उसकी ममलुकत हमेशा की ममलुकत है, और उसकी
सल्तनत नसल — दर — नसल।
4 मैं, नबूकदनज़र, अपने घर में मुतम'इन और अपने महल में
कामयाब था।
5 मैने एक ख़्वाब देखा, जिससे मैं परेशान हो गया और उन
ख़्यालात से जो मैने पलंग पर किए और उन ख़्यालों से जो मेरे
दिमाग़ में आए, मुझे परेशानी हुई।
6 इसलिए मैने फ़रमान जारी किया कि बाबुल के तमाम हकीम
मेरे सामने हाज़िर किए जाएँ, ताकि मुझसे उस ख़्वाब की ता'बीर
बयान करें।

7 चुनाँचे जादूगर और नजूमी और कसदी और फ़ालगीर हाज़िर
हुए, और मैने उनसे अपने ख़्वाब का बयान किया, पर उन्होंने
उसकी ता'बीर मुझ से बयान न की।
8 आख़िरकार दानीएल मेरे सामने आया, जिसका नाम
बेल्तशज़र है, जो मेरे मा'बूद का भी नाम है, उसमें मुक़द्दस इलाहों
की रूह है; इसलिए मैने उसके आमने — सामने ख़्वाब का बयान
किया और कहा:
9 ऐ बेल्तशज़र, जादूगरों के सरदार, चूँकि मैं जानता हूँ कि
मुक़द्दस इलाहों की रूह तुझमे है, और कि कोई राज़ की बात तेरे
लिए मुश्किल नहीं; इसलिए जो ख़्वाब मैने देखा उसकी कैफ़ियत
और ता'बीर बयान कर।
10 पलंग पर मेरे दिमाग़ की रोया ये थी: मैने निगाह की और
क्या देखता हूँ कि ज़मीन के तह में एक निहायत ऊँचा दरख़्त है।
11 वह दरख़्त बढ़ा और मज़बूत हुआ और उसकी चोटी
आसमान तक पहुँची, और वह ज़मीन की इन्तिहा तक दिखाई
देने लगा।
12 उसके पत्ते ख़ुशनुमा थे और मेवा फ़िरावान था, और उसमें
सबके लिए ख़ुराक थी; मैदान के जानवर उसके साये में और हवा
के परिन्दे उसकी शाखों पर बसेरा करते थे, और तमाम बशर ने
उस से परवरिश पाई।
13 "मैने अपने पलंग पर अपनी दिमाग़ी रोया पर निगाह की,
और क्या देखता हूँ कि एक निगहबान, हाँ एक फ़रिश्ता आसमान
से उतरा।
14 उसने बलन्द आवाज़ से पुकार कर यूँ कहा कि 'दरख़्त को
काटो, उसकी शाखें तराशो, और उसके पत्ते झाड़ो, और उसका
फल बिखेर दो; जानवर उसके नीचे से चले जाएँ और परिन्दे उसकी
शाखों पर से उड़ जाएँ।
15 लेकिन उसकी जड़ों का हिस्सा ज़मीन में बाक़ी रहने दो,

हाँ, लोहे और ताँम्बे के बन्धन से बन्धा हुआ मैदान की हरी घास
में रहने दो, और वह आसमान की शबनम से तर हो, और उसका
हिस्सा ज़मीन की घास में हैवानों के साथ हो।
16 उसका दिल इंसान का दिल न रहे, बल्कि उसको हैवान का
दिल दिया जाए; और उस पर सात दौर गुज़र जाएँ।
17 यह हुक्म निगहबानों के फ़ैसले से है, और यह हुक्म फ़रिश्तों
के कहने के मुताबिक़ है, ताकि सब जानदार पहचान लें कि हक़
त'आला आदमियों की ममलुकत में हुक्मरानी करता है और
जिसको चाहता है उसे देता है, बल्कि आदमियों में से अदना
आदमी को उस पर क़ायम करता है।
18 मैं नबूकदनज़र बादशाह ने यह ख़्वाब देखा है। ऐ बेल्तशज़र,
तू इसकी ता'बीर बयान कर, क्यूँकि मेरी ममलुकत के तमाम
हकीम मुझसे उसकी ता'बीर बयान नहीं कर सकते, लेकिन तू कर
सकता है; क्यूँकि मुक़द्दस इलाहों की रूह तुझमें मौजूद है।"
19 तब दानीएल जिसका नाम बेल्तशज़र है, एक वक़्त तक
ख़ामोश रहा, और अपने ख़्यालात में परेशान हुआ। बादशाह ने
उससे कहा, ऐ बेल्तशज़र, ख़्वाब और उसकी ता'बीर से तू परेशान
न हो। बेल्तशज़र ने जवाब दिया, ऐ मेरे ख़ुदावन्द, ये ख़्वाब तुझसे
कीना रखने वालों के लिए और उसकी ता'बीर तेरे दुश्मनों के लिए
हो!
20 वह दरख़्त जो तूने देखा कि बढ़ा और मज़बूत हुआ, जिसकी
चोटी आसमान तक पहुँची और ज़मीन की इन्तिहा तक दिखाई
देता था;
21 जिसके पत्ते ख़ुशनुमा थे और मेवा फ़रावान था, जिसमें सबके
लिए ख़ुराक थी। जिसके साये में मैदान के जानवर और शाखों पर
हवा के परिन्दे बसेरा करते थे।
22 ऐ बादशाह, वह तू ही है जो बढ़ा और मज़बूत हुआ, क्यूँकि
तेरी बुज़ुर्गी बढ़ी और आसमान तक पहुँची और तेरी सल्तनत

ज़मीन की इन्तिहा तक।

23 और जो बादशाह ने देखा कि एक निगहबान, यहाँ, एक
फ़रिश्ता आसमान से उतरा और कहने लगा, 'दरख़्त को काट
डालों और उसे बर्बाद करो, लेकिन उसकी जड़ों का हिस्सा ज़मीन
में बाक़ी रहने दो; बल्कि उसे लोहे और ताँम्बे के बन्धन से बन्धा
हुआ, मैदान की हरी घास में रहने दो कि वह आसमान की शबनम
से तर हो, और जब तक उस पर सात दौर न गुज़र जाएँ उसका
हिस्सा ज़मीन के हैवानों के साथ हो।

24 ऐ बादशाह, इसकी ता'बीर और हक़ — त'आला का वह
हुक्म, जो बदशाह मेरे ख़ुदावन्द के हक़ में हुआ है यही है,

25 कि तुझे आदमियों में से हाँक कर निकाल देंगे, और तू मैदान
के हैवानों के साथ रहेगा, और तू बैल की तरह घास खाएगा और
आसमान की शबनम से तर होगा, और तुझ पर सात दौर गुज़र
जाएँगे, तब तुझको मा'लूम होगा कि हक़ त'आला इंसान की
ममलुकत में हुक्मरानी करता है और उसे जिसको चाहता है देता
है।

26 और यह जो उन्होंने हुक्म किया कि दरख़्त की जड़ों के हिस्से
को बाक़ी रहने दो, उसका मतलब ये है कि जब तू मा'लूम कर
चुकेगा कि बादशाही का इख़्तियार आसमान की तरफ़ से है, तो तू
अपनी सल्तनत पर फिर क़ायम हो जाएगा।

27 इसलिए ऐ बादशाह, तेरे सामने मेरी सलाह क़ुबूल हो
और तू अपनी ख़ताओं को सदाक़त से और अपनी बदकिरदारी
को मिस्कीनों पर रहम करने से दूर कर, मुम्किन है इससे तेरा
इत्मिनान ज़्यादा हो।

28 यह सब कुछ नबूकदनज़र बादशाह पर गुज़रा।

29 एक साल बाद वह बाबुल के शाही महल में टहल रहा था।

30 बादशाह ने फ़रमाया, "क्या यह बाबुल — ए — आज़म
नहीं, जिसको मैने अपनी तवानाई की क़ुदरत से ता'मीर किया है

कि दार — उस — सल्तनत और मेरे जाह — ओ — जलाल का
नमूना हो?"
31 बादशाह यह बात कह ही रहा था कि आसमान से आवाज़
आई, ऐ नबूकदनज़र बादशाह, तेरे हक़ में यह फ़तवा है कि
सल्तनत तुझ से जाती रही।
32 और तुझे आदमियों में से हाँक कर निकाल देंगे, और तू
मैदान के हैवानों के साथ रहेगा और बैल की तरह घास खाएगा,
और सात दौर तुझ पर गुज़रेंगे, तब तुझको मा'लूम होगा कि हक़
त'आला आदमियों की ममलुकत में हुक्मरानी करता है, और उसे
जिसको चाहता है, देता है।
33 उसी वक़्त नबूकदनज़र बादशाह पर यह बात पूरी हुई, और
वह आदमियों में से निकाला गया और बैलों की तरह घास खाता
रहा और उसका बदन आसमान की शबनम से तर हुआ, यहाँ तक
कि उसके बाल उक़ाब के परों की तरह और उसके नाख़ून परिन्दों
के चँगुल की तरह बढ़ गए।
34 और इन दिनों के गुज़रने के बा'द, मैं नबूकदनज़र ने
आसमान की तरफ़ आँखें उठाई और मेरी 'अक़्ल मुझमे फिर आई
और मैने हक़ — त'आला का शुक्र किया, और उस हय्युल —
क़य्यूम की बड़ाई — ओ — सना की, जिसकी सल्तनत हमेशा
और जिसकी ममलुकत नसल — दर — नसल है।
35 और ज़मीन के तमाम बाशिन्दे नाचीज़ गिने जाते हैं और
वह आसमानी लश्कर और ज़मीन के रहने वालों के साथ जो कुछ
चाहता है करता है; और कोई नहीं जो उसका हाथ रोक सके। या
उससे कहे कि "तू क्या करता है?"
36 उसी वक़्त मेरी 'अक़्ल मुझ में फिर आई, और मेरी सल्तनत
की शौकत के लिए मेरा रौ'ब और दबदबा फिर मुझमे बहाल हो
गया, और मेरे सलाहकारों और अमीरों ने मुझे फिर ढूँडा और मैं
अपनी ममलुकत में क़ाईम हुआ और मेरी 'अज़मत में अफ़ज़ूनी

हुई।
37 अब मैं नबूकदनज़र, आसमान के बादशाह की बड़ाई और
'इज़्ज़त — ओ — ता'ज़ीम करता हूँ, क्यूँकि वह अपने सब कामों
में रास्त और अपनी सब राहों में 'इन्साफ़ करता है; और जो
मग़रूरी में चलते हैं उनको ज़लील कर सकता है।

5

[illegible]

1 बेलशज़र बादशाह ने अपने एक हज़ार हाकिमों की बड़ी
धूमधाम से मेहमान नवाज़ी की, और उनके सामने शराबनोशी
की।
2 बेलशज़र ने शराब से मसरूर होकर हुक्म किया कि सोने
चाँदी के बर्तन जो नबूकदनज़र उसका बाप येरूशलेम की हैकल
से निकाल लाया था, लाएँ ताकि बादशाह और उसके हाकिमों
और उसकी बीवियाँ और बाँदियाँ उनमें मयख़्वारी करें।
3 तब सोने के बर्तन को जो हैकल से, या'नी ख़ुदा के घर से जो
येरूशलेम में हैं ले गए थे, लाए और बादशाह और उसके हाकिमों
और उसकी बीवियों और बाँदियों ने उनमें शराब पी।
4 उन्होंने शराब पी और सोने और चाँदी और पीतल और लोहे
और लकड़ी और पत्थर के बुतों की बड़ाई की।
5 उसी वक़्त आदमी के हाथ की उंगलियाँ ज़ाहिर हुई और
उन्होंने शमा'दान के मुक़ाबिल बादशाही महल की दीवार के गच
पर लिखा, और बादशाह ने हाथ का वह हिस्सा जो लिखता था
देखा।
6 तब बादशाह के चेहरे का रंग उड़ गया और उसके ख़्यालात
उसको परेशान करने लगे, यहाँ तक कि उसकी कमर के जोड़ ढीले
हो गए और उसके घुटने एक दूसरे से टकराने लगे।
7 बादशाह ने चिल्ला कर कहा कि नजूमियों और कसदियों और
फ़ालगीरों को हाज़िर करें। बादशाह ने बाबुल के हकीमों से कहा,

जो कोई इस लिखे हुए को पढ़े और इसका मतलब मुझ से बयान
करे, अर्ग़वानी ख़िल'अत पाएगा और उसकी गर्दन में ज़र्रीन तौक़
पहनाया जाएगा, और वह ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम
होगा।
8 तब बादशाह के तमाम हकीम हाज़िर हुए, लेकिन न उस लिखे
हुए को पढ़ सके और न बादशाह से उसका मतलब बयान कर सके।
9 तब बेलशज़र बादशाह बहुत घबराया और उसके चेहरे का
रंग उड़ गया, और उसके हाकिम परेशान हो गए।
10 अब बादशाह और उसके हाकिमों की बातें सुनकर बादशाह
की वालिदा जश्नगाह में आई और कहने लगी, ऐ बादशाह,
हमेशा तक जीता रह! तेरे ख़्यालात तुझको परेशान न करें और
तेरा चेहरा उदास न हो।
11 तेरी ममलुकत में एक शख़्स है जिसमें पाक इलाहों की रूह है,
और तेरे बाप के दिनों में नूर और 'अक़्ल और हिकमत, इलाहों की
हिकमत की तरह उसमें पाई जाती थी; और उसको नबूकदनज़र
बादशाह, तेरे बाप ने जादूगरों और नजूमियों और कसदियों और
फ़ालगीरों का सरदार बनाया था।
12 क्यूँकि उसमें एक फ़ाज़िल रूह और दानिश और 'अक़्ल
और ख़्वाबों की ता'बीर और 'उक़्दा कुशाई और मुश्किलात के
हल की ताक़त थी — उसी दानीएल में जिसका नाम बादशाह ने
बेल्तशज़र रख्खा था — इसलिए दानीएल को बुलवा, वह मतलब
बताएगा।
13 तब दानीएल बादशाह के सामने हाज़िर किया गया।
बादशाह ने दानीएल से पूछा, क्या तू वही दानीएल है जो यहूदाह
के ग़ुलामों में से है, जिनको बादशाह मेरा बाप यहूदाह से लाया?
14 मैने तेरे बारे में सुना है कि इलाहों की रूह तुझमें है, और नूर
और 'अक़्ल और कामिल हिकमत तुझ में है।
15 हकीम और नजूमी मेरे सामने हाज़िर किए गए, ताकि इस

लिखे हुए को पढ़ें और इसका मतलब मुझ से बयान करें, लेकिन
वह इसका मतलब बयान नहीं कर सके।
16 और मैने तेरे बारे में सुना है कि तू ता'बीर और मुश्किलात
के हल पर क़ादिर है। इसलिए अगर तू इस लिखे हुए को पढ़े और
इसका मतलब मुझ से बयान करे, तो अर्ग़वानी खिल'अत पाएगा
और तेरी गर्दन में ज़र्रीन तौक़ पहनाया जाएगा और तू ममलुकत
में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा।
17 तब दानीएल ने बादशाह को जवाब दिया, तेरा इन'आम तेरे
ही पास रहे और अपना सिला किसी दूसरे को दे, तोभी मैं बादशाह
के लिए इस लिखे हुए को पढ़ूँगा और इसका मतलब उससे बयान
करूँगा।
18 ऐ बादशाह, ख़ुदा त'आला ने नबूकदनज़र, तेरे बाप को
सल्तनत और हशमत और शौकत और 'इज़्ज़त बख़्शी।
19 और उस हशमत की वजह से जो उसने उसे बख़्शी तमाम
लोग और उम्मतें और अहल — ए — ज़ुबान उसके सामने काँपने
और डरने लगे। उसने जिसको चाहा हलाक किया और जिसको
चाहा ज़िन्दा रख्खा, जिसको चाहा सरफ़राज़ किया और जिसको
चाहा ज़लील किया।
20 लेकिन जब उसकी तबी'अत में ग़ुरूर समाया और उसका
दिल ग़ुरूर से सख़्त हो गया, तो वह तख़्त — ए — सल्तनत से
उतार दिया गया और उसकी हशमत जाती रही।
21 और वह बनी आदम के बीच से हाँक कर निकाल दिया गया,
और उसका दिल हैवानों का सा बना और गोरख़रों के साथ रहने
लगा और उसे बैलों की तरह घास खिलाते थे और उसका बदन
आसमान की शबनम से तर हुआ; जब तक उसने मा'लूम न किया
कि ख़ुदा — त'आला इंसान की ममलुकत में हुक्मरानी करता है,
और जिसको चाहता है उस पर क़ाईम करता है।
22 लेकिन तू, ऐ बेलशज़र, जो उसका बेटा है; बावजूद यह कि

तू इस सब को जानता था तोभी तूने अपने दिल से 'आजिज़ी न
की।
23 बल्कि आसमान के ख़ुदावन्द के सामने अपने आप को बलन्द
किया, और उसकी हैकल के बर्तन तेरे पास लाए और तूने अपने
हाकिमों और अपनी बीवियों और बाँदियों के साथ उनमें मय —
ख़्वारी की, और तूने सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और
लकड़ी और पत्थर के बुतों की बड़ाई की, जो न देखते न सुनते
और न जानते हैं; और उस ख़ुदा की तम्जीद न की जिसके हाथ में
तेरा दम है, और जिसके क़ाबू में तेरी सब राहें हैं।
24 "इसलिए उसकी तरफ से हाथ का वह हिस्सा भेजा गया,
और यह नविश्ता लिखा गया।
25 और यूँ लिखा है: मिने, मिने, तक़ील — ओ — फ़रसीन।
26 और उसके मानी यह हैं: मिने, या'नी ख़ुदा ने तेरी ममलुकत
महसूब किया और उसे तमाम कर डाला।
27 तक़ील, या'नी तू तराज़ू में तोला गया और कम निकला।
28 फ़रीस, या'नी तेरी ममलुकत फ़ारसियों को दी गई।"
29 तब बेलशज़र ने हुक्म किया, और दानीएल को अर्ग़वानी
लिबास पहनाया गया और ज़र्रीन तौक़ उसके गले में डाला गया,
और 'ऐलान कराया गया कि वह ममलुकत में तीसरे दर्जे का
हाकिम हो।
30 उसी रात को बेलशज़र, कसदियों का बादशाह क़त्ल हुआ।
31 और दारा मादी ने बासठ बरस की उम्र में उसकी सल्तनत
हासिल की।

6

[illegible]

1 दारा को पसन्द आया कि ममलुकत पर एक सौ बीस नाज़िम
मुक़र्रर करे, जो सारी ममलुकत पर हुकूमत करें।

2 और उन पर तीन वज़ीर हों जिनमें से एक दानीएल था, ताकि
नाज़िम उनको हिसाब दें और बादशाह नुक़सान न उठाए।
3 और चूँकि दानीएल में फ़ाज़िल रूह थी, इसलिए वह उन
वज़ीरों और नाज़िमों पर सबक़त ले गया और बादशाह ने चाहा
कि उसे सारे मुल्क पर मुख़्तार ठहराए।
4 तब उन वज़ीरों और नाज़िमों ने चाहा कि हाकिमदारी में
दानीएल पर क़ुसूर साबित करें, लेकिन वह कोई मौक़ा' या क़ुसूर
न पा सके, क्यूँकि वह ईमानदार था और उसमें कोई ख़ता या बुराई
न थी।
5 तब उन्होंने कहा, कि "हम इस दानीएल को उसके ख़ुदा की
शरी'अत के अलावा किसी और बात में क़ुसूरवार न पाएँगे।"
6 इसलिए यह वज़ीर और नाज़िम बादशाह के सामने जमा'
हुए और उससे इस तरह कहने लगे, कि "ऐ दारा बादशाह, हमेशा
तक जीता रह!
7 ममलुकत के तमाम वज़ीरों और हाकिमों और नाज़िमों और
सलाहकारों और सरदारों ने एक साथ मशवरा किया है कि एक
ख़ुस्रवाना तरीक़ा मुक़र्रर करें, और एक इम्तिनाई फ़रमान जारी
करें, ताकि ऐ बादशाह, तीस रोज़ तक जो कोई तेरे अलावा किसी
मा'बूद या आदमी से कोई दरख़्वास्त करे, शेरों की माँद में डाल
दिया जाए।
8 अब ऐ बादशाह, इस फ़रमान को क़ायम कर और लिखे हुए
पर दस्तख़त कर, ताकि तब्दील न हो जैसे मादियों और फ़ारसियों
के तौर तरीक़े जो तब्दील नहीं होते।"
9 तब दारा बदशाह ने उस लिखे हुए और फ़रमान पर दस्तख़त
कर दिए।
10 और जब दानीएल ने मा'लूम किया कि उस लिखे हुए पर
दस्तख़त हो गए, तो अपने घर में आया और उसकी कोठरी का
दरीचा येरूशलेम की तरफ़ खुला था, वह दिन में तीन मरतबा

हमेशा की तरह घुटने टेक कर ख़ुदा के सामने दुआ और उसकी
शुक्रगुज़ारी करता रहा।
11 तब यह लोग जमा' हुए और देखा कि दानीएल अपने ख़ुदा
के सामने दुआ और इल्तिमास कर रहा है।
12 तब उन्होंने बादशाह के पास आकर उसके सामने उसके
फ़रमान का यूँ ज़िक्र किया, कि "ऐ बादशाह, क्या तूने इस फ़रमान
पर दस्तख़त नहीं किए, कि तीस रोज़ तक जो कोई तेरे अलावा
किसी मा'बूद या आदमी से कोई दरख़्वास्त करे, शेरों की मान्द
में डाल दिया जाएगा? बादशाह ने जवाब दिया, मादियों और
फ़ारसियों के ना बदलने वाले तौर तरीक़े के मुताबिक़ यह बात
सच है।"
13 तब उन्होंने बादशाह के सामने 'अर्ज़ किया, कि "ऐ बादशाह,
यह दानीएल जो यहूदाह के ग़ुलामों में से है, न तेरी परवा करता
है और न उस इम्तिनाई फ़रमान को जिस पर तूने दस्तख़त किए
हैं काम में लाता है, बल्कि हर रोज़ तीन बार दुआ करता है।"
14 जब बादशाह ने यह बातें सुनीं, तो निहायत रन्जीदा हुआ
और उसने दिल में चाहा कि दानीएल को छुड़ाए, और सूरज डूबने
तक उसके छुड़ाने में कोशिश करता रहा।
15 फिर यह लोग बादशाह के सामने जमा' हुए और बादशाह
से कहने लगे, कि "ऐ बादशाह, तू समझ ले कि मादियों और
फ़ारसियों के तौर तरीक़े यूँ हैं कि जो फ़रमान और क़ानून बादशाह
मुक़र्रर करे कभी नहीं बदलता।"
16 तब बादशाह ने हुक्म दिया, और वह दानीएल को लाए और
शेरों की माँद में डाल दिया, पर बादशाह ने दानीएल से कहा, 'तेरा
ख़ुदा, जिसकी तू हमेशा इबादत करता है तुझे छुड़ाएगा।
17 और एक पत्थर लाकर उस माँद के मुँह पर रख दिया, और
बादशाह ने अपनी और अपने अमीरों की मुहर उस पर कर दी,

ताकि वह बात जो दानीएल के हक़ में ठहराई गई थी न बदले।
18 तब बादशाह अपने महल में गया और उसने सारी रात फ़ाक़ा
किया, और मूसीक़ी के साज़ उसके सामने न लाए और उसकी नींद
जाती रही।
19 और बादशाह सुबह बहुत सवेरे उठा, और जल्दी से शेरों की
माँद की तरफ़ चला।
20 और जब माँद पर पहुँचा, तो ग़मनाक आवाज़ से दानीएल
को पुकारा। बादशाह ने दानीएल को ख़िताब करके कहा, ऐ
दानीएल, ज़िन्दा ख़ुदा के बन्दे, क्या तेरा ख़ुदा जिसकी तू हमेशा
इबादत करता है, क़ादिर हुआ कि तुझे शेरों से छुड़ाए?
21 तब दानीएल ने बादशाह से कहा, ऐ बादशाह, हमेशा तक
जीता रह!
22 मेरे ख़ुदा ने अपने फ़रिश्ते को भेजा और शेरों के मुँह बन्द
कर दिए, और उन्होंने मुझे नुक़सान नहीं पहुँचाया क्यूँकि मैं उसके
सामने बे — गुनाह साबित हुआ, और तेरे सामने भी ऐ बादशाह,
मैने ख़ता नहीं की।
23 इसलिए बादशाह निहायत ख़ुश हुआ और हुक्म दिया कि
दानीएल को उस माँद से निकालें। तब दानीएल उस माँद से
निकाला गया, और मा'लूम हुआ कि उसे कुछ नुक़सान नहीं
पहुँचा, क्यूँकि उसने अपने ख़ुदा पर भरोसा किया था।
24 और बादशाह ने हुक्म दिया और वह उन शख़्सों को जिन्होंने
दानीएल की शिकायत की थी लाए, और उनके बच्चों और
बीवियों के साथ उनको शेरों की मान्द में डाल दिया; और शेर
उन पर ग़ालिब आए और इससे पहले कि मान्द की तह तक पहुँचें,
शेरों ने उनकी सब हड्डियाँ तोड़ डालीं।
25 तब दारा बादशाह ने सब लोगों और क़ौमों और अहल — ए
— ज़ुबान को जो इस ज़मीन पर बसते थे, ख़त लिखा: “तुम्हारी
सलामती बढ़ती जाये!

26 मैं यह फ़रमान जारी करता हूँ कि मेरी ममलुकत के हर एक सूबे के लोग, दानीएल के ख़ुदा के सामने डरते और काँपते हों क्यूँकि वही ज़िन्दा ख़ुदा है और हमेशा क़ायम है; और उसकी सल्तनत लाज़वाल है और उसकी ममलुकत हमेशा तक रहेगी।
27 वही छुड़ाता और बचाता है, और आसमान और ज़मीन में वही निशान और 'अजायब दिखाता है, उसीने दानीएल को शेरों के पंजों से छुड़ाया है।”
28 इसलिए यह दानीएल दारा की सल्तनत और ख़ोरस फ़ारसी की सल्तनत में कामयाब रहा।

7

[illegible]

1 शाह — ए — बाबुल बेलशज़र के पहले साल में दानीएल ने अपने बिस्तर पर ख़्वाब में अपने सिर के दिमाग़ी ख़्यालात की रोया देखी। तब उसने उस ख़्वाब को लिखा, और उन ख़्यालात का मुकम्मल बयान किया।
2 दानीएल ने यूँ कहा, कि मैने रात को एक ख़्वाब देखा, और क्या देखता हूँ कि आसमान की चारों हवाएँ समन्दर पर ज़ोर से चलीं।
3 और समन्दर से चार बड़े हैवान, जो एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ थे निकले।
4 पहला शेर — ए — बबर की तरह था, और उक़ाब के से बाज़ू रखता था; और मैं देखता रहा, जब तक उसके पर उखाड़े गए और वह ज़मीन से उठाया गया, और आदमी की तरह पाँव पर खड़ा किया गया और इंसान का दिल उसे दिया गया।
5 और क्या देखता हूँ कि एक दूसरा हैवान रीछ की तरह है, और वह एक तरफ़ सीधा खड़ा हुआ; और उसके मुँह में उसके दाँतों के

बीच तीन पसलियाँ थीं, और उन्होंने उससे कहा, 'कि उठ, और
कसरत से गोश्त खा।
6 फिर मैने निगाह की, और क्या देखता हूँ कि एक और हैवान
तेंदवे की तरह उठा, जिसकी पीठ पर परिन्दे के से चार बाज़ू थे
और उस हैवान के चार सिर थे; और सल्तनत उसे दी गई।
7 फिर मैने रात को ख़्वाब में देखा, और क्या देखता हूँ कि
चौथा हैवान हौलनाक और हैबतनाक और निहायत ज़बरदस्त है,
और उसके दाँत लोहे के बड़े — बड़े थे; वह निगल जाता और
टुकड़े टुकड़े करता था, और जो कुछ बाक़ी बचता उसको पाँव
से लताड़ता था, और यह उन सब पहले हैवानों से मुख़्तलिफ़ था
और उसके दस सींग थे।
8 मैं ने उन सींगो पर ग़ौर से नज़र की, और क्या देखता हूँ
कि उनके बीच से एक और छोटा सा सींग निकला, जिसके आगे
पहलों में से तीन सींग जड़ से उखाड़े गए, और क्या देखता हूँ कि
उस सींग में इंसान के सी आँखे हैं और एक मुँह है जिस से ग़ुरूर
की बातें निकलती हैं।
9 मेरे देखते हुए तख़्त लगाए गए, और पुराने दिनों में बैठ गया;
उसका लिबास बर्फ़ की तरह सफ़ेद था, और उसके सिर के बाल
ख़ालिस ऊन की तरह थे; उसका तख़्त आग के शोले की तरह था,
और उसके पहिये जलती आग की तरह थे।
10 उसके सामने से एक आग का दरिया जारी था, हज़ारों हज़ार
उसकी ख़िदमत में हाज़िर थे और लाखों लाख उसके सामने खड़े
थे, 'अदालत हो रही थी, और किताबें खुली थी।
11 'मैं देख ही रहा था कि उस सींग की ग़ुरूर की बातों की
आवाज़ की वजह से, मेरे देखते हुए वह हैवान मारा गया और
उसका बदन हलाक करके शोलाज़न आग में डाला गया।
12 और बाक़ी हैवानों की सल्तनत भी उन से ले ली गई, लेकिन
वह एक ज़माना और एक दौर ज़िन्दा रहे।

13 'मैने रात को ख़्वाब में देखा, और क्या देखता हूँ एक शख़्स
आदमज़ाद की तरह आसमान के बा'दलों के साथ आया और गुज़रे
दिनों तक पहुँचा, वह उसे उसके सामने लाए।
14 और सल्तनत और हशमत और ममलुकत उसे दी गई, ताकि
सब लोग और उम्मतें और अहल — ए — ज़ुबान उसकी ख़िदमत
गुज़ारी करें उसकी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है जो जाती न
रहेगी और उसकी ममलुकत लाज़वाल होगी।
15 मुझ दानीएल की रूह मेरे बदन में मलूल हुई, और मेरे
दिमाग़ के ख़्यालात ने मुझे परेशान कर दिया।
16 जो मेरे नज़दीक खड़े थे, मैं उनमें से एक के पास गया और
उससे इन सब बातों की हक़ीक़त दरियाफ़्त की, इसलिए उसने
मुझे बताया और इन बातों का मतलब समझा दिया,
17 'यह चार बड़े हैवान चार बादशाह हैं, जो ज़मीन पर बर्पा
होंगे।
18 लेकिन हक़ — त'आला के पाक लोग सल्तनत ले लेंगे और
हमेशा तक हाँ हमेशा से हमेशा तक उस सल्तनत के मालिक
रहेंगे।
19 तब मैने चाहा कि चौथे हैवान की हक़ीक़त समझूँ, जो उन
सब से मुख़्तलिफ़ और निहायत हौलनाक था, जिसके दाँत लोहे
के और नाख़ून पीतल के थे, जो निगलता और टुकड़े — टुकड़े
करता और जो कुछ बचता उसको पाँव से लताड़ता था।
20 और दस सींगों की हक़ीक़त जो उसके सिर पर थे, और उस
सींग की जो निकला और जिसके आगे तीन गिर गए, या'नी जिस
सींग की आँखें थीं और एक मुँह था जो बड़े ग़ुरूर की बातें करता
था, और जिसकी सूरत उसके साथियों से ज़्यादा रो'ब दार थी।
21 मैं ने देखा कि वही सींग मुक़द्दसों से जंग करता और उन पर
ग़ालिब आता रहा।
22 जब तक कि पुराने दिन न आये, और हक़ त'आ ला के पाक

लोगों का इन्साफ़ न किया गया, और वक़्त आ न पहुँचा कि पाक
लोग सल्तनत के मालिक हों।
23 उसने कहा, कि चौथा हैवान दुनिया की चौथी सल्तनत जो
तमाम सल्तनतों से मुख़तलिफ़ है, और ज़मीन को निगल जायेगी
और उसे लताड़ कर टुकड़े — टुकड़े करेगी।
24 और वह दस सींग दस बादशाह हैं, जो उस सल्तनत में खड़े
होंगे; और उनके बाद एक और खड़ा होगा, और वह पहलों से
मुख़्तलिफ़ होगा और तीन बादशाहों को पस्त करेगा।
25 और वह हक़ — त'आला के ख़िलाफ़ बातें करेगा, और हक़
त'आला के मुक़द्दसों को तंग करेगा और मुक़र्ररा वक़्त व शरी'अत
को बदलने की कोशिश करेगा, और वह एक दौर और दौरों और
नीम दौर तक उसके हवाले किए जाएँगे।
26 तब 'अदालत क़ायम होगी, और उसकी सल्तनत उससे ले
लेंगे कि उसे हमेशा के लिए नेस्त — ओ — नाबूद करें।
27 और तमाम आसमान के नीचे सब मुल्कों की सल्तनत और
ममलुकत और सल्तनत की हशमत हक़ त'आला के मुक़द्दस लोगों
को बख़्शी जाएगी, उसकी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है और
तमाम ममलुकत उसकी, ख़िदमत गुज़ार और फ़रमाबरदार होंगी।
28 "यहाँ पर यह हुक्म पूरा हुआ, मैं दानीएल अपने शकों से
निहायत घबराया और मेरा चेहरा मायूस हुआ, लेकिन मैने यह
बात दिल ही में रक्खी।"

8

[illegible]

1 बेलशज़र बादशाह की सल्तनत के तीसरे साल में मुझ को,
हाँ, मुझ दानीएल को एक ख़्वाब नज़र आया, या'नी मेरे पहले
ख़्वाब के बा'द।

2 और मैंने 'आलम — ए — रोया में देखा, और जिस वक़्त मैने
देखा, ऐसा मा'लूम हुआ कि मैं महल — ए — सोसन में था, जो
सूबा — ए — 'ऐलाम में है। फिर मैने 'आलम — ए — रोया ही
में देखा कि मैं दरिया — ए — ऊलाई के किनारे पर हूँ।
3 तब मैने आँख उठा कर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि
दरिया के पास एक मेंढा खड़ा है जिसके दो सींग हैं, दोनों सींग
ऊँचे थे, लेकिन एक दूसरे से बड़ा था और बड़ा दूसरे के बाद
निकला था।
4 मैने उस मेंढे को देखा कि पश्चिम — और — उत्तर — और
— दक्खिन की तरफ़ सींग मारता है, यहाँ तक कि न कोई जानवर
उसके सामने खड़ा हो सका और न कोई उससे छुड़ा सका, पर वह
जो कुछ चाहता था करता था, यहाँ तक कि वह बहुत बड़ा हो
गया।
5 और मैं सोच ही रहा था कि एक बकरा पश्चिम की तरफ़ से
आकर तमाम ज़मीन पर ऐसा फिरा कि ज़मीन को भी न छुआ,
और उस बकरे की दोनों आँखों के बीच एक 'अजीब सींग था।
6 और वह उस दो सींग वाले मेंढे, के पास, जिसे मैने दरिया के
किनारे खड़ा देखा था आया और अपने ज़ोर के क़हर से उस पर
हमलावर हुआ।
7 और मैने देखा कि वह मेंढे के क़रीब पहुँचा और उसका ग़ज़ब
उस पर भड़का और उसने मेंढे को मारा और उसके दोनों सींग तोड़
डाले और मेंढे में उसके मुक़ाबले की हिम्मत न थी, तब उसने उसे
ज़मीन पर पटख़ दिया और उसे लताड़ा और कोई न था कि मेंढे
को उससे छुड़ा सके।
8 और वह बकरा निहायत बुज़ुर्ग हुआ, और जब वह निहायत
ताक़तवर हुआ तो उसका बड़ा सींग टूट गया और उसकी जगह
चार अजीब सींग आसमान की चारों हवाओं की तरफ़ निकले।
9 और उनमें से एक से एक छोटा सींग निकला, जो दक्खिन
और पूरब और जलाली मुल्क की तरफ़ बे निहायत बढ़ गया।

10 और वह बढ़ कर अजराम — ए — फ़लक तक पहुँचा, और
उसने कुछ अजराम — ए — फ़लक और सितारों को ज़मीन पर
गिरा दिया और उनको लताड़ा।
11 बल्कि उसने अजराम के फ़रमाँरवाँ तक अपने आप को
बलन्द किया, और उससे दाइमी क़ुर्बानी को छीन लिया और
उसका मक़दिस गिरा दिया।
12 और अजराम ख़ताकारी की वजह से क़ायम रहने वाली
क़ुर्बानी के साथ उसके हवाले किए गए, और उसने सच्चाई को
ज़मीन पर पटख़ दिया और वह कामयाबी के साथ यूँ ही करता
रहा।
13 तब मैने एक फ़रिश्ते को कलाम करते सुना, और दूसरे
फ़रिश्ते ने उसी फ़रिश्ते से जो कलाम करता था पूछा कि
दाइमी क़ुर्बानी और वीरान करने वाली ख़ताकारी की रोया जिसमें
मक़दिस और अजराम पायमाल होते हैं, कब तक रहेगी?
14 और उसने मुझ से कहा, कि "दो हज़ार तीन सौ सुबह —
और — शाम तक, उसके बाद मक़दिस पाक किया जाएगा।"
15 फिर यूँ हुआ कि जब मैं दानीएल ने यह रोया देखी, और
इसकी ता'बीर की फ़िक्र में था, तो क्या देखता हूँ कि मेरे सामने
कोई इंसान सूरत खड़ा है।
16 और मैने ऊलाई में से आदमी की आवाज़ सुनी, जिसने
बलन्द आवाज़ से कहा, कि "ऐ जबराईल, इस शख़्स को इस रोया
के मा'ने समझा दे।"
17 चुनाँचे वह जहाँ मैं खड़ा था नज़दीक आया, और उसके आने
से मैं डर गया और मुँह के बल गिरा, पर उसने मुझसे कहा, "ऐ
आदमज़ाद! समझ ले कि यह रोया आख़िरी ज़माने के ज़रिए'
है।"
18 और जब वह मुझसे बातें कर रहा था, मैं गहरी नींद में मुँह के
बल ज़मीन पर पड़ा था, लेकिन उसने मुझे पकड़ कर सीधा खड़ा
किया,

19 और कहा कि “देख, मैं तुझे समझाऊँगा कि क़हर के आख़िर
में क्या होगा, क्यूँकि यह हुक्म आख़िरी मुक़र्ररा वक़्त के बारे है।
20 जो मेंढा तू ने देखा, उसके दोनों सींग मादी और फ़ारस के
बादशाह हैं।
21 और वह जसीम बकरा यूनान का बादशाह है, और उसकी
आँखों के बीच का बड़ा सींग पहला बादशाह है।
22 और उसके टूट जाने के बा'द, उसकी जगह जो चार और
निकले वह चार सल्तनतें हैं जो उसकी क़ौम में क़ायम होंगी,
लेकिन उनका इख़्तियार उसकी तरह न होगा।
23 और उनकी सल्तनत के आख़िरी दिनों में जब ख़ताकार लोग
हद तक पहुँच जाएँगे, तो एक सख़्त और बेरहम बादशाह खड़ा
होगा।
24 यह बड़ा ज़बरदस्त होगा लेकिन अपनी ताक़त से नहीं, और
'अजीब तरह से बर्बाद करेगा और कामयाब होगा और काम करेगा
और ताक़तवरों और मुक़द्दस लोगों को हलाक करेगा।
25 और अपनी चतुराई से ऐसे काम करेगा कि उसकी फ़ितरत
के मन्सूबे उसके हाथ में ख़ूब अन्जाम पाएँगे, और दिल में बड़ा
ग़ुरूर करेगा और सुलह के वक़्त में बहुतों को हलाक करेगा; वह
बादशाहों के बादशाह से भी मुक़ाबिला करने के लिए उठ खड़ा
होगा, लेकिन बे हाथ हिलाए ही शिकस्त खाएगा।
26 और यह सुबह शाम की रोया जो बयान हुई यक़ीनी है,
लेकिन तू इस रोया को बन्द कर रख, क्यूँकि इसका 'इलाक़ा बहुत
दूर के दिनों से है।”
27 और मुझ दानीएल को ग़श आया, और मैं कुछ रोज़ तक
बीमार पड़ा रहा; फिर मैं उठा और बादशाह का कारोबार करने
लगा, और मैं ख़्वाब से परेशान था लेकिन इसको कोई न समझा।

9

1 दारा — बिन — 'अख़्सूयरस जो मादियों की नसल से था,
और कसदियों की ममलुकत पर बादशाह मुक़र्रर हुआ, उसके
पहले साल में,
2 या'नी उसकी सल्तनत के पहले साल में, मैं दानीएल, ने
किताबों में उन बरसों का हिसाब समझा, जिनके ज़रिए' ख़ुदावन्द
का कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ कि येरूशलेम की
बर्बादी पर सत्तर बरस पूरे गुज़रेंगे।
3 और मैने ख़ुदावन्द ख़ुदा की तरफ़ रुख़ किया, और मैं मिन्नत
और मुनाजात करके और रोज़ा रखकर और टाट ओढ़कर और राख
पर बैठकर उसका तालिब हुआ।
4 और मैने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से दुआ की और इक़रार किया
और कहा, कि "ऐ ख़ुदावन्द अज़ीम और मुहीब ख़ुदा तू अपने
फ़रमाबरदार मुहब्बत रखनेवालों के लिए अपने 'अहद — ओ —
रहम को क़ायम रखता है;
5 हम ने गुनाह किया, हम बरगश्ता हुए, हम ने शरारत की,
हम ने बग़ावत की बल्कि हम ने तेरे हुक्मों और तौर तरीक़े को
तर्क किया है;
6 और हम तेरे ख़िदमतगुज़ार नबियों के फ़रमाबरदार नहीं हुए,
जिन्होंने तेरा नाम लेकर हमारे बादशाहों और हाकिमों से और
हमारे बाप — दादा और मुल्क के सब लोगों से कलाम किया।
7 ऐ ख़ुदावन्द, सदाक़त तेरे लिए है और रूस्वाई हमारे लिए,
जैसे अब यहूदाह के लोगों और येरूशलेम के बाशिन्दों और दूर
— ओ — नज़दीक के तमाम बनी — इस्राईल के लिए है, जिनको
तूने तमाम मुमालिक में हाँक दिया क्यूँकि उन्होंने तेरे ख़िलाफ़
गुनाह किया।
8 ऐ ख़ुदावन्द, मायूसी हमारे लिए है; हमारे बादशाहों, हमारे
उमरा और हमारे बाप — दादा के लिए, क्यूँकि हम तेरे गुनहगार

हुए।

9 ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा रहीम — ओ — ग़फ़ूर है, अगरचे हमने
उससे बग़ावत की।
10 हम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की आवाज़ के सुनने वाले नहीं हुए
कि उसकी शरी'अत पर, जो उसने अपने ख़िदमतगुज़ार नबियों
की मा'रिफ़त हमारे लिए मुक़र्रर की, 'अमल करें।
11 हाँ, तमाम बनी — इस्राईल ने तेरी शरी'अत को तोड़ा और
ना फ़रमानी इख़्तियार की ताकि तेरी आवाज़ के फ़रमाबरदार न
हों, इसलिए वह ला'नत और क़सम, जो ख़ुदा के ख़ादिम मूसा
की तौरेत में लिखी हैं हम पर पूरी हुई, क्यूँकि हम उसके गुनहगार
हुए।
12 और उसने जो कुछ हमारे और हमारे क़ाज़ियों के ख़िलाफ़ जो
हमारी 'अदालत करते थे फ़रमाया था, हम पर बलाए — 'अज़ीम
लाकर साबित कर दिखाया, क्यूँकि जो कुछ येरूशलेम से किया
गया वह तमाम जहान में' और कहीं नहीं हुआ।
13 जैसा मूसा की तौरेत में लिखा है, यह तमाम मुसीबत हम
पर आई, तोभी हम ने अपने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से इल्तिजा न
की कि हम अपनी बदकिरदारी से बा'ज़ आते और तेरी सच्चाई
को पहचानते।
14 इसलिए ख़ुदावन्द ने बला को निगाह में रखा और उसको
हम पर अपने सब कामों में जो वह करता है सच्चा है, लेकिन हम
उसकी आवाज़ के फरमाबरदार न हुए।
15 और अब, ऐ ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा जो ताक़तवर बाज़ू से
अपने लोगों को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, और अपने
लिए नाम पैदा किया जैसा आज के दिन है, हमने गुनाह किया,
हमने शरारत की।
16 ऐ ख़ुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपनी तमाम
सदाक़त के मुताबिक़ अपने क़हर — ओ — ग़ज़ब को अपने शहर

येरूशलेम, या'नी अपने कोह — ए — मुक़द्दस से ख़त्म कर,
क्यूँकि हमारे गुनाहों और हमारे बाप — दादा की बदकिरदारी की
वजह से येरूशलेम और तेरे लोग अपने सब आसपास वालों के
नज़दीक जा — ए — मलामत हुए।
17 इसलिए अब ऐ हमारे ख़ुदा, अपने ख़ादिम की दुआ और
इल्तिमास सुन, और अपने चेहरे को अपनी ही ख़ातिर अपने
मक़दिस पर जो वीरान है जलवागर फ़रमा।
18 ऐ मेरे ख़ुदा, वीरानों को, और उस शहर को जो तेरे नाम
से कहलाता है देख कि हम तेरे सामने अपनी रास्तबाज़ी पर नहीं
बल्कि तेरी बेनिहायत रहमत पर भरोसा करके मुनाजात करते हैं।
19 ऐ ख़ुदावन्द, सुन, ऐ ख़ुदावन्द, मु'आफ़ फ़रमाए ख़ुदावन्द,
सुन ले और कुछ कर; ऐ मेरे ख़ुदा, अपने नाम की ख़ातिर देर न
कर, क्यूँकि तेरा शहर और तेरे लोग तेरे ही नाम से कहलाते हैं।"
20 और जब मैं यह कहता और दुआ करता, और अपने और
अपनी क़ौम इस्राईल के गुनाहों का इक़रार करता था, और
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने अपने ख़ुदा के कोह — ए —
मुक़द्दस के लिए मुनाजात कर रहा था;
21 हाँ, मैं दुआ में यह कह ही रहा था कि वही शख़्स जिबराईल
जिसे मैने शुरू' में रोया में देखा था, हुक्म के मुताबिक़ तेज़
परवाज़ी करता हुआ आया, और शाम की क़ुर्बानी पेश करने के
वक़्त के क़रीब मुझे छुआ।
22 और उसने मुझे समझाया, और मुझ से बातें कीं और कहा,
ऐ दानीएल, मैं अब इसलिए आया हूँ कि तुझे अक़्ल — ओ —
समझ बख़्शूँ।
23 तेरी मुनाजात के शुरू' ही में हुक्म जारी हुआ, और मैं आया
हूँ कि तुझे बताऊँ, क्यूँकि तू बहुत 'अज़ीज़ है; इसलिए तू ग़ौर कर
और ख़्वाब को समझ ले।
24 "तेरे लोगों और तेरे मुक़द्दस शहर के लिए सत्तर हफ़्ते

मुक़र्रर किए गए कि ख़ताकारी और गुनाह का ख़ातिमा हो जाए,
बदकिरदारी का कफ़्फ़ारा दिया जाए, हमेशा रास्तबाज़ी क़ायम'
हो, रोया — ओ — नबुव्वत पर मुहर हो और पाक तरीन मक़ाम
मम्सूह किया जाए।
25 इसलिए तू मा'लूम कर और समझ ले कि येरूशलेम की
बहाली और ता'मीर का हुक्म जारी होने से मम्सूह फ़रमाँरवाँ तक
सात हफ़्ते और बासठ हफ़्ते होंगे; तब फिर बाज़ार ता'मीर किए
जाएँगे और फ़सील बनाई जाएगी, मगर मुसीबत के दिनों में।
26 और बासठ हफ़्तों के बाद वह मम्सूह क़त्ल किया जाएगा,
और उसका कुछ न रहेगा, और एक बादशाह आएगा जिसके लोग
शहर और मक़दिस को बर्बाद करेंगे, और उसका अन्जाम गोया
तूफ़ान के साथ होगा, और आख़िर तक लड़ाई रहेगी; बर्बादी
मुक़र्रर हो चुकी है।
27 और वह एक हफ़्ते के लिए बहुतों से 'अहद क़ायम करेगा,
और निस्फ़ हफ़्ते में ज़बीहे और हदिये मौक़ूफ़ करेगा, और फ़सीलों
पर उजाड़ने वाली मकरूहात रखी जाएँगी; यहाँ तक कि बर्बादी
कमाल को पहुँच जाएगी, और वह बला जो मुक़र्रर की गई है उस
उजाड़ने वाले पर वाक़े' होगी।”

10

[illegible]

1 शाह — ए — फ़ारस ख़ोरस के तीसरे साल में दानीएल पर,
जिसका नाम बेल्तशज़र रखा गया, एक बात ज़ाहिर की गई और
वह बात सच और बड़ी लश्करकशी की थी; और उसने उस बात
पर ग़ौर किया, और उस ख़्वाब का राज़ समझा।
2 मैं दानीएल उन दिनों में तीन हफ़्तों तक मातम करता रहा।
3 न मैंने लज़ीज़ खाना खाया, न गोश्त और मय ने मेरे मुँह में
दख़ल पाया और न मैंने तेल मला, जब तक कि पूरे तीन हफ़्ते
गुज़र न गए।

4 और पहले महीने की चौबीसवीं तारीख़ को जब मैं बड़े दरिया,
या'नी दरिया — ए — दजला के किनारे पर था,
5 मैने आँख उठा कर नज़र की और क्या देखता हूँ कि एक शख़्स
कतानी लिबास पहने और ऊफ़ाज़ के ख़ालिस सोने का पटका
कमर पर बाँधे खड़ा है।
6 उसका बदन ज़बरजद की तरह, और उसका चेहरा बिजली
सा था, और उसकी आँखें आग के चराग़ों की तरह थीं; उसके बाज़ू
और पाँव रंगत में चमकते हुए पीतल से थे, और उसकी आवाज़
अम्बोह के शोर की तरह थी।
7 मैं दानीएल ही ने यह ख़्वाब देखा, क्यूँकि मेरे साथियों ने
ख़्वाब न देखा, लेकिन उन पर बड़ी कपकपी तारी हुई और वह
अपने आप को छिपाने को भाग गए।
8 इसलिए मैं अकेला रह गया और यह बड़ा ख़्वाब देखा, और
मुझ में हिम्मत न रही क्यूँकि मेरी ताज़गी मायूसी से बदल गई
और मेरी ताक़त जाती रही।
9 लेकिन मैने उसकी आवाज़ और बातें सुनीं, और मैं उसकी
आवाज़ और बातें सुनते वक़्त मुँह के बल भारी नींद में पड़ गया
और मेरा मुँह ज़मीन की तरफ़ था।
10 और देख एक हाथ ने मुझे छुआ, और मुझे घुटनों और
हथेलियों पर बिठाया।
11 और उसने मुझ से कहा, "ऐ दानीएल, 'अज़ीज़ मर्द, जो बातें
मैं तुझ से कहता हूँ समझ ले; और सीधा खड़ा हो जा, क्यूँकि अब
मैं तेरे पास भेजा गया हूँ।" और जब उसने मुझ से यह बात कही,
तो मैं काँपता हुआ खड़ा हो गया।
12 तब उसने मुझ से कहा, ऐ दानीएल, ख़ौफ़ न कर, क्यूँकि जिस
दिन से तू ने दिल लगाया कि समझे, और अपने ख़ुदा के सामने
'आजिज़ी करे; तेरी बातें सुनी गईं और तेरी बातों की वजह से मैं
आया हूँ।

13 पर फ़ारस की ममलुकत के मुवक्किल ने इक्कीस दिन तक
मेरा मुक़ाबला किया। फिर मीकाएल, जो मुक़र्रब फ़रिश्तों में से
है, मेरी मदद को पहुँचा और मैं शाहान — ए — फ़ारस के पास
रुका रहा।
14 लेकिन अब मैं इसलिए आया हूँ कि जो कुछ तेरे लोगों पर
आख़िरी दिनों में आने को है, तुझे उसकी ख़बर दूँ क्यूँकि अभी ये
रोया ज़माना — ए — दराज़ के लिए है।
15 और जब उसने यह बातें मुझ से कहीं, मैं सिर झुका कर
ख़ामोश हो रहा।
16 तब किसी ने जो आदमज़ाद की तरह था मेरे होटों को छुआ,
और मैने मुँह खोला, और जो मेरे सामने खड़ा था उस से कहा, ऐ
ख़ुदावन्द, इस ख़्वाब की वजह से मुझ पर ग़म का हुजूम है, और
मैं नातवाँ हूँ।
17 इसलिए यह ख़ादिम, अपने ख़ुदावन्द से क्यूँकर हम कलाम
हो सकता है? इसलिए मैं बिल्कुल बेताब — ओ — बेदम हो
गया।
18 तब एक और ने जिसकी सूरत आदमी की सी थी, आकर मुझे
छुआ और मुझको ताक़त दी;
19 और उसने कहा, “ऐ 'अज़ीज़ मर्द, ख़ौफ़ न कर, तेरी
सलामती हो, मज़बूत — और — तवाना हो।” और जब उसने
मुझसे यह कहा, तो मैने तवानाई पाई और कहा, ऐ मेरे ख़ुदावन्द,
फ़रमा, क्यूँकि तू ही ने मुझे ताक़त बख़्शी है।”
20 तब उसने कहा, क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास किस लिए
आया हूँ? और अब मैं फ़ारस के मुवक्किल से लड़ने को वापस
जाता हूँ; और मेरे जाते ही यूनान का मुवक्किल आएगा।
21 लेकिन जो कुछ सच्चाई की किताब में लिखा है, तुझे बताता
हूँ; और तुम्हारे मुवक्किल मीकाएल के सिवा इसमें मेरा कोई
मददगार नहीं है।

11

1 और दारा मादी की सल्तनत के पहले साल में, मैं ही उसको
क़ायम करने और ताक़त देने को खड़ा हुआ।

????? ?? ?????? ?? ??????

2 और अब मैं तुझको हक़ीक़त बताता हूँ। फ़ारस में अभी तीन
बादशाह और खड़े होंगे, और चौथा उन सबसे ज़्यादा दौलतमन्द
होगा, और जब वो अपनी दौलत से ताक़त पाएगा, तो सब को
यूनान की सल्तनत के ख़िलाफ़ उभारेगा।
3 लेकिन एक ज़बरदस्त बादशाह खड़ा होगा, जो बड़े तसल्लुत
से हुक्मरान होगा और जो कुछ चाहेगा करेगा।
4 और उसके खड़े होते ही उसकी सल्तनत को ज़वाल आएगा,
और आसमान की चारों हवाओं की अतराफ़ पर तक़सीम हो
जाएगी लेकिन न उसकी नसल को मिलेगी न उसका एक बाल
भी बाक़ी रहेगा बल्कि वह सल्तनत जड़ से उखड़ जाएगी और
ग़ैरों के लिए होगी।
5 और शाह — ए — जुनूब ज़ोर पकड़ेगा, और उसके हाकिम
में से एक उससे ज़्यादा ताक़त — ओ — इख़्तियार हासिल करेगा
और उसकी सल्तनत बहुत बड़ी होगी।
6 और चन्द साल के बाद वह आपस में मेल करेंगे, क्यूँकि शाह
— ए — जुनूब की बेटी शाह — ए — शिमाल के पास आएगी,
ताकि इत्तिहाद क़ायम हो; लेकिन उसमें क़ुव्वत — ए — बाज़ू न
रहेगी और न वह बादशाह क़ायम रहेगा न उसकी ताक़त, बल्कि
उन दिनों में वह अपने बाप और अपने लाने वालों और ताक़त देने
वाले के साथ छोड़ दी जाएगी।
7 लेकिन उसकी जड़ों की एक शाख़ से एक शख़्स उसकी जगह
खड़ा होगा, वह सिपहसालार होकर शाह — ए — शिमाल के
क़िले' में दाख़िल होगा, और उन पर हमला करेगा और ग़ालिब
आएगा।

8 और उनके बुतों और ढाली हुई मूरतों को, सोने चाँदी के
क़ीमती बर्तन के साथ ग़ुलाम करके मिस्र को ले जाएगा; और
चन्द साल तक शाह — ए — शिमाल से अलग रहेगा।
9 फिर वह शाह — ए — जुनूब की ममलुकत में दाख़िल होगा,
पर अपने मुल्क को वापस जाएगा।
10 लेकिन उसके बेटे बरअंगेख़्ता होंगे, जो बड़ा लश्कर जमा'
करेंगे और वह चढ़ाई करके फैलेगा, और गुज़र जाएगा और वह
लौट कर उसके क़िले' तक लड़ेंगे।
11 और शाह — ए — जुनूब ग़ज़बनाक होकर निकलेगा और
शाह — ए — शिमाल से जंग करेगा, और वह बड़ा लश्कर लेकर
आएगा और वह बड़ा लश्कर उसके हवाले कर दिया जाएगा।
12 और जब वह लश्कर तितर बितर कर दिया जाएगा, तो
उसके दिल में ग़ुरूर समाएगा; वह लाखों को गिराएगा लेकिन
ग़ालिब न आएगा।
13 और शाह — ए — शिमाल फिर हमला करेगा और पहले
से ज़्यादा लश्कर जमा' करेगा, और कुछ साल के बाद बहुत से
लश्कर — और — माल के साथ फिर हमलावर होगा।
14 'और उन दिनों में बहुत से शाह — ए — जुनूब पर चढ़ाई
करेंगे, और तेरी क़ौम के क़ज़्ज़ाक़ भी उठेंगे कि उस ख़्वाब को पूरा
करें; लेकिन वह गिर जाएँगे।
15 चुनाँचे शाह — ए — शिमाल आएगा और दमदमा बाँधेगा
और हसीन शहर ले लेगा, और जुनूब की ताक़त क़ायम न रहेगी
और उसके चुने हुए मर्दों में मुक़ाबले की हिम्मत न होगी।
16 और हमलावर जो कुछ चाहेगा करेगा, और कोई उसका
मुक़ाबला न कर सकेगा; वह उस जलाली मुल्क में क़याम करेगा,
और उसके हाथ में तबाही होगी।
17 और वह यह इरादा करेगा कि अपनी ममलुकत की तमाम
शौकत के साथ उसमें दाख़िल हो, और सच्चे उसके साथ होंगे;

वह कामयाब होगा और वह उसे जवान कुँवारी देगा कि उसकी
बर्बादी का ज़रिया' हो, लेकिन यह तदबीर क़ायम न रहेगी और
उसको इससे कुछ फ़ाइदा न होगा।
18 फिर वह समंदरी — मुमालिक का रुख़ करेगा और बहुत से
ले लेगा, लेकिन एक सरदार उसकी मलामत को मौक़ूफ़ करेगा,
बल्कि उसे उसी के सिर पर डालेगा।
19 तब वह अपने मुल्क के क़िलों' की तरफ़ मुड़ेगा, लेकिन ठोकर
खाकर गिर पड़ेगा और मादूम हो जाएगा।
20 और उसकी जगह एक और खड़ा होगा, जो उस ख़ूबसूरत
ममलुकत में महसूल लेने वाले को भेजेगा; लेकिन वह चन्द रोज़
में बे क़हर — ओ — जंग ही हलाक हो जाएगा।
21 फिर उसकी जगह एक पाजी खड़ा होगा जो सल्तनत की
'इज़्ज़त का हक़दार न होगा, लेकिन वह अचानक आएगा और
चापलूसी करके ममलुकत पर क़ाबिज़ हो जाएगा।
22 और वह सैलाब — ए — अफ़वाज को अपने सामने
दौड़ाएगा और शिकस्त देगा, और अमीर — ए — 'अहद को भी
न छोड़ेगा।
23 और जब उसके साथ 'अहद — ओ — पैमान हो जाएगा तो
दग़ाबाज़ी करेगा, क्यूँकि वह बढ़ेगा और एक छोटी जमा'अत की
मदद से ताक़त हासिल करेगा।
24 और हुक्म के दिनों में मुल्क के वीरान मक़ामात में दाख़िल
होगा, और जो कुछ उसके बाप — दादा और उनके आबा —
ओ — अजदाद से न हुआ था कर दिखाएगा; वह ग़नीमत और
लूट और माल उनमें तक़सीम करेगा और कुछ 'अरसे तक मज़बूत
क़िलों' के ख़िलाफ़ मन्सूबे बाँधेगा।
25 वह अपनी ताक़त और दिल को ऊभारेगा कि बड़ी फ़ौज
के साथ शाह — ए — जुनूब पर हमला करे, और शाह — ए —
जुनूब निहायत बड़ा और ज़बरदस्त लश्कर लेकर उसके मुक़ाबिले

को निकलेगा लेकिन वह न ठहरेगा, क्यूँकि वह उसके ख़िलाफ़
मन्सूबे बाँधेंगे।
26 बल्कि जो उसका दिया खाते हैं, वही उसे शिकस्त देंगे और
उसकी फ़ौज तितर बितर होगी और बहुत से क़त्ल होंगे।
27 और इन दोनों बादशाहों के दिल शरारत की तरफ़ माइल
होंगे, वह एक ही दस्तरख़्वान पर बैठ कर झूट बोलेंगे लेकिन
कामयाबी न होगी, क्यूँकि ख़ातिमा मुक़र्ररा वक़्त पर होगा।
28 तब वह बहुत सी ग़नीमत लेकर अपने मुल्क को वापस
जाएगा; और उसका दिल 'अहद — ए — मुक़द्दस के ख़िलाफ़
होगा, और वह अपनी मर्ज़ी पूरी करके अपने मुल्क को वापस
जाएगा।
29 मुक़र्ररा वक़्त पर वह फिर जुनूब की तरफ़ ख़ुरूज करेगा,
लेकिन ये हमला पहले की तरह न होगा।
30 क्यूँकि अहल — ए — कित्तीम के जहाज़ उसके मुक़ाबिले
को निकलेंगे, और वह रंजीदा होकर मुड़ेगा और 'अहद — ए
— मुक़द्दस पर उसका ग़ज़ब भड़केगा, और वह उसके मुताबिक़
'अमल करेगा; बल्कि वह मुड कर उन लोगों से जो 'अहद — ए
— मुक़द्दस को छोड़ देंगे, इत्तफ़ाक़ करेगा।
31 और अफ़वाज उसकी मदद करेंगी, और वह मज़बूत मक़दिस
को नापाक और दाइमी क़ुर्बानी को रोकेंगे और उजाड़ने वाली
मकरूह चीज़ को उसमें नस्ब करेंगे।
32 और वह 'अहद — ए — मुक़द्दस के ख़िलाफ़ शरारत करने
वालों को ख़ुशामद करके बरगश्ता करेगा, लेकिन अपने ख़ुदा को
पहचानने वाले ताक़त पाकर कुछ कर दिखाएँगे।
33 और वह जो लोगों में 'अक़्लमन्द हैं बहुतों को ता'लीम देंगे,
लेकिन वह कुछ मुद्दत तक तलवार और आग और ग़ुलामी और
लूट मार से तबाह हाल रहेंगे।
34 और जब तबाही में पड़ेंगे तो उनको थोड़ी सी मदद से ताक़त

पहुँचेगी, लेकिन बहुतेरे ख़ुशामद गोई से उनमें आ मिलेंगे।
35 और बा'ज़ अहल — ए — फ़हम तबाह हाल होंगे ताकि
पाक और साफ़ और बुर्राक़ हो जाएँ जब तक आख़िरी वक़्त न आ
जाए, क्यूँकि ये मुक़र्ररा वक़्त तक मना' है।
36 और बादशाह अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ चलेगा, और तकब्बुर
करेगा और सब मा'बूदों से बड़ा बनेगा, और मा'बूदों के ख़ुदा के
ख़िलाफ़ बहुत सी हैरत — अंगेज़ बातें कहेगा, और इक़बाल मन्द
होगा यहाँ तक कि क़हर की तस्कीन हो जाएगी; क्यूँकि जो कुछ
मुक़र्रर हो चुका है वाक़े' होगा।
37 वह अपने बाप — दादा के मा'बूदों की परवाह न करेगा, और
न 'औरतों की पसन्द को और न किसी और मा'बूद को मानेगा;
बल्कि अपने आप ही को सबसे बेहतर जानेगा।
38 और अपने मकान पर मा'बूद — ए — हिसार की ताज़ीम
करेगा, और जिस मा'बूद को उसके बाप — दादा न जानते थे,
सोना और चाँदी और क़ीमती पत्थर और नफ़ीस तोहफ़े दे कर
उसकी तकरीम करेगा।
39 वह बेगाना मा'बूद की मदद से मुहकम क़िलों' पर हमला
करेगा; जो उसको क़ुबूल करेंगे उनको बड़ी 'इज़्ज़त बख़्शेगा और
बहुतों पर हाकिम बनाएगा और रिश्वत में मुल्क को तक़सीम
करेगा।
40 और ख़ातिमे के वक़्त में शाह — ए — जुनूब उस पर हमला
करेगा, और शाह — ए — शिमाल रथ और सवार और बहुत से
जहाज़ लेकर हवा के झोंके की तरह उस पर चढ़ आएगा, और
ममालिक में दाख़िल होकर सैलाब की तरह गुज़रेगा।
41 और जलाली मुल्क में भी दाख़िल होगा और बहुत से
मग़लूब हो जाएँगे, लेकिन अदोम और मोआब और बनी —
'अम्मून के ख़ास लोग उसके हाथ से छुड़ा लिए जाएँगे।
42 वह दीगर मुमालिक पर भी हाथ चलाएगा और मुल्क — ए

— मिस्र भी बच न सकेगा।
43 बल्कि वह सोने चाँदी के ख़ज़ानों और मिस्र की तमाम नफ़ीस
चीज़ों पर क़ाबिज़ होगा, और लूबी और कूशी भी उसके हम —
रक़ाब होंगे।
44 लेकिन पश्चिमी और उत्तरी अतराफ़ से अफ़वाहें उसे
परेशान करेंगी, और वह बड़े ग़ज़ब से निकलेगा कि बहुतों को
नेस्त — ओ — नाबूद करे।
45 और वह शानदार मुक़द्दस पहाड़ और समुन्दर के बीच शाही
ख़ेमे लगाएगा, लेकिन उसका ख़ातिमा हो जाएगा और कोई
उसका मददगार न होगा।

12

[illegible]

1 और उस वक़्त मीकाईल मुक़र्रब फ़रिश्ता जो तेरी क़ौम के
फ़रज़न्दों की हिमायत के लिए खड़ा है उठेगा और वह ऐसी
तकलीफ़ का वक़्त होगा कि इब्तिदाई क़ौम से उस वक़्त तक कभी
न हुआ होगा, और उस वक़्त तेरे लोगों में से हर एक, जिसका नाम
किताब में लिखा होगा रिहाई पाएगा।
2 और जो ख़ाक में सो रहे हैं उनमें से बहुत से जाग उठेंगे, कुछ
हमेशा की ज़िन्दगी के लिए और कुछ रुस्वाई और हमेशा की
ज़िल्लत के लिए।
3 और 'अक़्लमन्द नूर — ए — फ़लक की तरह चमकेंगे, और
जिनकी कोशिश से बहुत से रास्तबाज़ हो गए, सितारों की तरह
हमेशा से हमेशा तक रोशन होंगे।
4 लेकिन तू ऐ दानीएल, इन बातों को बन्द कर रख, और किताब
पर आख़िरी ज़माने तक मुहर लगा दे। बहुत से इसकी तफ़्तीश
— ओ — तहक़ीक़ करेंगे और 'अक़्ल बढ़ती रहेगी।

5 फिर मैं दानिएल ने नज़र की, और क्या देखता हूँ कि दो शख़्स
और खड़े थे; एक दरिया के इस किनारे पर और दूसरा दरिया के
उस किनारे पर।
6 और एक ने उस शख़्स से जो कतानी लिबास पहने था और
दरिया के पानी पर खड़ा था पूछा, कि "इन 'अजायब के अन्जाम
तक कितनी मुद्दत है?"
7 और मैने सुना कि उस शख़्स ने जो कतानी लिबास पहने
था, जो दरिया के पानी के ऊपर खड़ा था, दोनों हाथ आसमान
की तरफ़ उठा कर हय्युल क़य्यूम की क़सम खाई और कहा कि
एक दौर और दौर और नीम दौर। और जब वह मुक़द्दस लोगों की
ताक़त को नेस्त कर चुके तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।
8 और मैंने सुना लेकिन समझ न सका तब मैंने कहा ऐ मेरे
ख़ुदावन्द इनका अंजाम क्या होगा।
9 उसने कहा ऐ दानिएल तू अपनी राह ले क्यूँकि यह बातें
आख़िरी वक़्त तक बन्द — ओ — सरबमुहर रहेंगी।
10 और बहुत लोग पाक किए जायेंगे और साफ़ — ओ — बर्राक़
होंगे लेकिन शरीर शरारत करते रहेंगे और शरीरों में से कोई न
समझेगा लेकिन 'अक़्लमन्द समझेंगे।
11 और जिस वक़्त से दाइमी क़ुर्बानी ख़त्म की जायेगी और
वह उजाड़ने वाली मकरूह चीज़ खड़ी की जायेगी एक हज़ार दो
सौ नव्वे दिन होंगे।
12 मुबारक है वह जो एक हज़ार तीन सौ पैंतीस रोज़ तक
इन्तिज़ार करता है।
13 लेकिन तू अपनी राह ले जब तक कि मुद्दत पूरी न हो क्यूँकि
तू आराम करेगा और दिनों के ख़ातिमे पर अपनी मीरास में उठ
खड़ा होगा।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.
You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.
Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023
4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc